Deendayal Upadhyaya Gorakhpur University, Gorakhpur ,UP.India
Media and Public Relations Office

दिनांक 19 / 06 / 2022

प्रकाशनार्थ

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

आजादी का अमृत महोत्सव

दर्शन शास्त्र एवं संस्कृत विभाग दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित

अमृत योग सप्ताह (14 जून से 20 जून 2022) के अंतर्गत मानवता के लिए योग विषय पर विशिष्ट व्याख्यानमाला षष्ठम दिवस का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संरक्षक यशस्वी कुलपति माननीय प्रो. राजेश सिंह, कार्यक्रम के षष्ठम दिवस के विशिष्ट अतिथि प्रो. ऋषि कान्त पाण्डेय, दर्शन शास्त्र विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयागराज ऑनलाइन उपस्थित हुए । अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र एवं संस्कृत विभाग,प्रो. दीपक प्रकाश त्यागी ने कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं सभी प्रतिभागियों का स्वागत एवं अभिनंदन एवं विषय प्रवर्तन किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. ऋषि कांत पाण्डेय,पूर्व विभागाध्यक्ष एवं आचार्य दर्शन शास्त्र विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयागराज ने अपने विशिष्ट व्याख्यान में कहा कि योग का अर्थ है मिलन अर्थात जीवात्मा का परमात्मा से मिलन चित्त वृत्तियों का निरोध ही योग है। चित्त वृति का निरोध समाधि में होता है। अतः योग को समाधि कहा गया है। चित्त का अर्थ है अतः करण। इसमें मन बुद्धि औरअहंकार तीनों आते हैं। योग में बुद्धि , अहंकार और मन इन तीनों को मिलाकर चित्त नाम दिया गया है। उन्होंने अपने व्याख्यान में योग दर्शन में निहित पंचक्लेशो यथा अविद्या, अश्मिता राग द्वेष एवं अभिनिवेश विस्तृत रूप से प्रकाश डाला और समझाया कि क्लेशों कारण जीव संसार चक्र में पड़कर नाना प्रकार के कष्ट भोगता है। उन्होंने अपने व्याख्यान में योग दर्शन में निहित चित भूमियों, क्षिप्त,मूढ़, विक्षिप्त एकाग्र की अवस्था को विशेष रुप से समझाया। उन्होंने अपने व्याख्यान में योग दर्शन की साधना पद्धति अष्टांग योग मार्ग यम, नियम ,आसन, प्राणायाम प्रत्याहार ,धारणा ,ध्यान, समाधि पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। उन्होंने अपने कहां की गीता में भगवान कृष्ण ने अर्जुन को आत्मज्ञान कराया। और कहा कि जब तक मनुष्य को आत्मज्ञान नहीं हो जाता तब तक वह अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता। उन्होंने योग में समाधि की अवस्था पर विस्तृत प्रकार डाला और कहा कि इसी अवस्था से हम परमतत्व का साक्षात्कार कर सकते हैं। उन्होंने अपने व्याख्यान में समाधि की दो अवस्था सम्प्रज्ञात समाधि तथा असम्प्रज्ञात समाधि की अवस्था को सरल एवं सहज शब्दों में समझाया। इसी अवस्था में मनुष्य अपने विशुद्ध स्वरुप को जान सकता है और समस्त दुखों का निवृत्त कर ईश्वर का आत्म साक्षात्कर कर सकता है। इस कार्यक्रम में डॉ रमेश चंद,डॉ अर्चना कुमारी ,डॉ कुलदीप शुक्ल डॉ अमित यादव डॉ प्रवीण गुप्ता डॉ आशुतोष त्रिपाठी , डॉ सीमा श्रीवास्तव एवं विभिन्न योग के सुधीजन तथा अनेक छात्र–छात्राऐं उपस्थिति हुए । कार्यक्रम का संचालन डॉ संजय कुमार राम एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ कुल दीपक शुक्ल ने किया।

Media and Public Relations Officer
Deen Dayal Upadhyaya Gorakhpur
University, Gorakhpur